मैं अपनी आखरी साँस तक तुमसे प्यार करूँगा

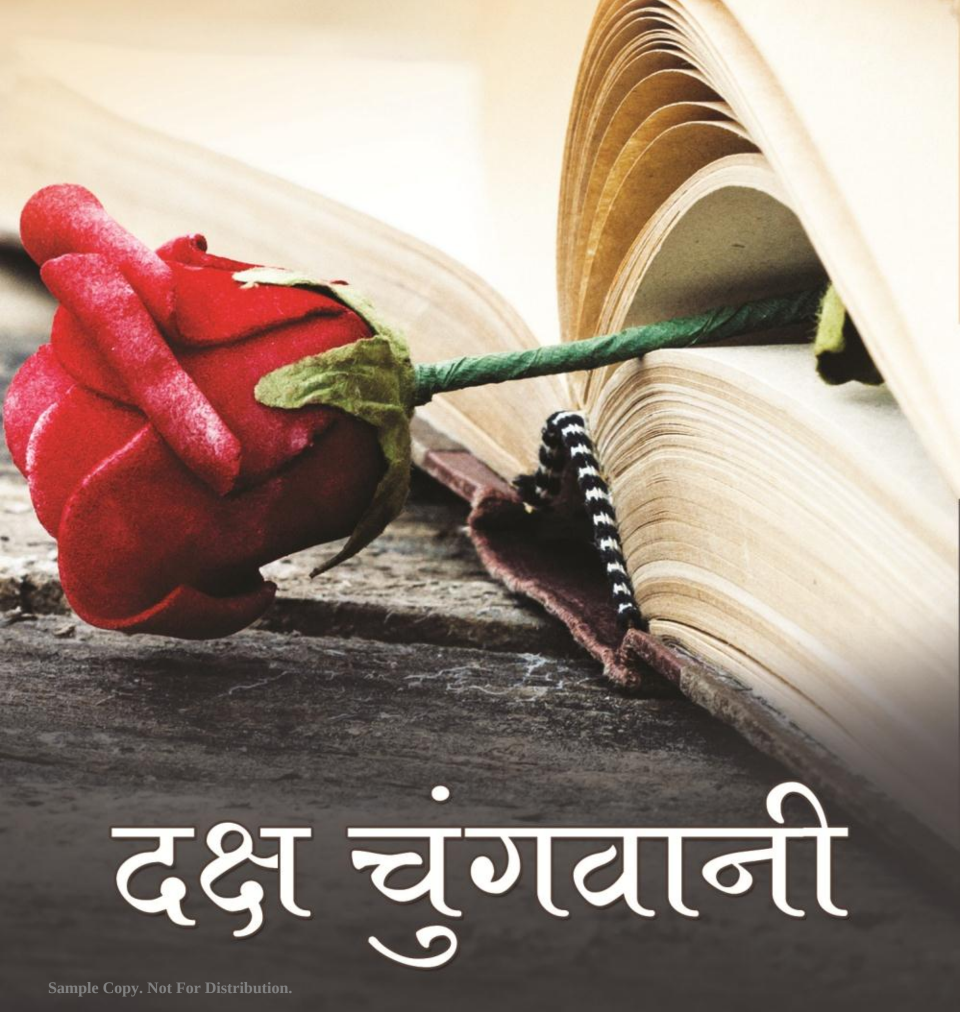

दक्ष चुंगवानी

Sample Copy. Not For Distribution.

मैं अपनी आखिरी साँस
तक तुमसे प्यार करूँगा

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-404-2

Price: ₹ 255.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

मैं अपनी आखिरी साँस तक तुमसे प्यार करूँगा

दक्ष चुंगवानी

EDUCREATION PUBLISHING

(Since 2011)

www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

श्री सत्गुरु देवाय नमः

समर्पण

मैं अपने श्री गुरु महाराज जी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ और ये बुक उन्हे समर्पित करूँगा जिनकी कृपा और अंदरूनी हिम्मत देने की वजह से मैने डिप्रेशन जैसी गम्भीर बीमारी को हराकर, इस बुक को लिख पाया और दोबारा दी गयी इस जिंदगी के लिये उन्हे लाखोंबार धन्यवाद !

मैं बाबा नानक और सत्गुरु ओशो के प्रति भी आभार प्रकट करके उन्हे ये बुक समर्पित करूँगा। जिनसे मुझे अपनी जिंदगी के कई बड़े सवालो का जवाब मिला और अंततः मुझे मेरे अस्तित्व मे होने का कारण पता चला की मैं कौन हूँ? मुझे करना क्या है? मुझे किसलिये करना है? और मेरे जीवन की वास्तविक मंजिल क्या है? उनके मार्गदर्शन के द्वारा ही मैं अपनी लिखने की कला को ज्यादा गम्भीर और कुशल बना पाया।

आखिर मे मैं स्वर्गीय श्री प्रकाश तनवानी जी जो मेरे पहले प्रेरणास्रोत थे जिन्होने मेरे लिखने की चिंगारी को आग बनाया और डॉ अनीश खान जी को भी मैं समर्पित करूँगा जो की मेरी नजर मे दुनिया के सबसे महान डॉक्टर है। जिन्होने इस बुक के लिखे जाने तक के सफर मे मेरी बीमारी से लड़ने मे मेरी काफी मदद की।

Sample Copy. Not For Distribution.

आभार

मैं उन सभी लोगो को दिल से धन्यवाद कहना चाहूंगा, जिन्होने मेरा भले ही कभी समर्थन ना किया हो मगर मेरी इस बुक के लिये उन्होने हर सम्भव मदद की।

अपने सभी फेसबुक फ्रेंड, इंस्टाग्राम फॉलोवर्स और व्हाट्सअप मे जुड़े सभी लोगो को धन्यवाद जिन्होने मेरी बुक से रिलेटेड फोटो, वीडियो टीसर और अन्य चीजो को अपने लोगो मे शेयर किया।

मैं राज बत्रा और दीप मोंदगिल को धन्यवाद कहूँगा द्य जिन्होने शुरुआत से मेरी बुक को अपनी पहली बुक समझ के पब्लिशिंग के सारे कामों मे मेरी मदद की।

मैं अपने सभी जीगरी दोस्तो और फीमेल फ्रेंड्स को भी धन्यवाद देना चाहूंगा द्य जो काफी वक्त से मेरी बुक के आने का इन्तेजार करने के साथ साथ मुझे पूरा सपोर्ट कर रहे थे द्य इससे पहले मैं उनकी नजरो मे एक बड़ा कॉमेडी दरिंदा था मगर मैने पूरा वादा किया है की ये बुक मेरे अब तक के सारे पाप धो देगी।

मेरे सभी ताने मारने वाले रिश्तेदार को धन्यवाद जिन्होने अक्सर मुझे नींद से जगा के बताया की 'दुनिया सिर्फ उगते सूरज को सलाम करती है द्य' ये बुक मेरे लिये टेप का काम भी करेगी जिसको मैं उनके मुँह मे लगा के चुप करा सकुंगा।

अपने माँ पापा और सभी परिवार वालो को मैं आभार देना चाहूंगा, जिन्होने ना चाहते हुये भी मेरी काफी मदद की और आखिर मे मान लिया, मैं उनके किसी काम का नही रहा द्य उम्र मे छोटे मगर कर्मों मे बड़े मेरे छोटे भाई सुमित को भी धन्यवाद कहूंगा, दुआ करूँगा भगवान सबको ऐसा भाई दे जिसका किया हुआ बलिदान ही मेरी सफलता का कारण है।

अपने बुक के हिन्दी टायपिस्ट अजीत जी और पंकज जी, जिन्होने इस बुक की कहानी मे डूबकर काफी शानदार काम किया और इंग्लीश कनवर्टिन्ग टीम पायल, ज्योति, आकिब और अंतरिक्ष जी जिन्होने मेरी बुक का सबसे मुश्किल काम पूरे सपोर्ट और अपनेपन के साथ किया द्य इन सभी लोगो को भी तहे दिल से धन्यवाद !

अपनी एजु क्रियेशन पब्लिशिंग टीम को भी मैं धन्यवाद देना चाहूंगा द्य जिन्होने मुझ जैसे सौ सवाली राइटर के साथ बड़ी धैर्यता और उम्दा तरीके से सपोर्ट किया ।

Sample Copy. Not For Distribution.

और अंत मे उन सभी को जिन्होने किसी ना किसी तरीके से बुक की शुरुआत से लेकर इसके पब्लिश होने तक के सफर मे मेरी मदद की मुझे आगे बढ़ने की हिम्मत दी सबको धन्यवाद !

Sample Copy. Not For Distribution.

प्रस्तावना

कमरे के अन्दर आते ही मैं चेयर में बैठ गया। अपनी आंखे बंद की और मां को याद करके खुद को समझाया कि, जो मैंने फैसला किया है क्या वो सही हैं। ऐसे हालात में मैं कोई प्रोफेशनल काम के बारे में सोच भी नहीं सकता था। मगर मेरे लिए हुए फैसले की वजह से मुझे अपनी दोस्ती का फर्ज निभाना था। क्योंकि दक्ष का एहसान चुकाने के लिए शायद मैं जिंदा न रह पाऊंगा।

मैंने अपना लैपटॉप बैग से निकाला और उसे ऑन करके उसमें सबसे पहले सारे स्क्रीनप्ले फाइल को चेक किया, जो सब सही सलामत थे। मैंने मेल करने के लिए नेट कनेक्ट किया जिसके कनेक्ट होते ही अपनी मेल आई.डी. ओपन की।

को - dakshTanwani@91gmail.com

विषय – अलविदा दक्ष

अलविदा दक्ष मेरे भाई तूने जो मुझ पर एहसान किये है, उसको मैं शायद अब ना चुका पाऊंगा क्योंकि मैंने जो फैसला किया है, उसके बाद तेरा तो क्या, मुझ पर किये किसी का भी एहसान मैं नहीं चुका पाऊंगा। मगर उससे पहले तुझसे किया हुआ वादा जरूर पूरा करके जाऊंगा। मैं तुझे हमारी बनने वाली फिल्म का स्क्रीनप्ले सेंड कर रहा हूं और कसम दे रहा हूं कि इस फिल्म को अपनी फिल्म मेकिंग स्टाइल से तु इसे सबसे यादगार फिल्म बनाएगा।

बस एक आखिरी मदद तुझसे चाहता हूं। अपने लिए नहीं बल्कि उनके लिए, जो प्यार की वजह से अपनी जिदंगी बर्बाद कर देते है। मेरी ये कहानी उनको रास्ता दिखाएगी कि हर प्रेम कहानी अधूरी रह जाती है, चाहे वो इतिहास की हो या आज की, प्यार में पड़ने वाले और पड़ चुके लोगों को भी मैं इस कहानी के जरिये बताऊंगा की मैंने किस तरह से उन सब आयामों को देखा और महसूस किया है, जो एक सच्चा प्यार करने वाले को होता है। ताकि हर कोई जान सके इन्हें और अपनी जिंदगी की कहानी को अधूरी होने से बचा सके। मैं नहीं चाहता जो मेरे साथ हुआ वो किसी और के साथ हो मगर इतना यकीन के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग बोलते हैं कि सच्चा प्यार करने वाले जरूर मिलते है तो वो झूठ ही बोलते है, पता नहीं वो कौन सी दुनिया में मिलते हैं, जिसके बारे में कई मनगडत कहानियां बनी है क्योंकि अगर प्रेम कहानियाँ पूरी होती तो आज मैं वो ना करने जा रहा होता जो हर साल लाखों प्यार करने वाले करते है।

Sample Copy. Not For Distribution.

हीर–रांझा, श्री–फरहान, रोमयो–जूलियट जैसे प्यार करने वाले इसलिये मर गये क्योंकि इनको अपना सच्चा प्यार जीते जी नहीं मिल सका और ये दुनिया को बता गये कि प्यार करने वाले का क्या हश्र होता है। मुझे मालूम है तू समझ गया होगा, इतना पढ़कर कि मैं क्या करने जाने वाला हूं? मगर तेरा पढ़ने के बाद मुझे रिप्लाई देना बेकार है। क्योंकि वो मैं कभी नही ंपढ़ पाउंगा।

मैंने दक्ष को पहले फिल्म के स्क्रीनप्ले की सारी फाइल सेंड कर दी क्योंकि मुझे खुद पर इतना भरोसा नहीं था कि मैं अपनी कहानी पूरी भी लिख पाउंगा या उससे पहले ही वो करने चला जाऊंगा जिसके बारे में मैंने फैसला किया है। इसलिए मेरी कहानी पूरी न भी हो पाए कम से कम मैं दोस्ती का फर्ज तो निभा कर ही जाऊंगा।

फाइल सेंड करके मैंने 3.4 लंबी सांसे ली और अपने सेलफोन पर उसकी फोटो देखकर उन लम्हों को याद किया जब मैंने ये फोटो ली थी, उन्हें देखकर मैं इमोशनल हो गया और आंखों से आए आंसू की बूंद मेरे फोन स्क्रीन पर गिरी। मैंने उन लम्हों को ध्यान से हटाया और आंखे बंद करके आंसू अंदर लिए अपने दिल में ही कहा 'आई लव यू पवित्रा!'। आंखे खोलकर मैंने बड़ी मुश्किल से उंगलियां लेपटॉप पर रखी। अपनी कहानी टाइप करने के लिए। जैसे–तैसे मैंने कहानी का टाइटल लिखा 'हमारी पहली मोहब्बत!' क्योंकि ये मेरी और उसकी पहली और आखिरी मोहब्बत थी। जिसमें मैंने प्यार के वो सब पड़ाव महसूस किए जो आज तक मैंने पढ़े और सुने थे शायद इसी वजह से हम सब की जिदंगी में आया पहला प्यार मरते दम तक नहीं भुलाया जा सकता।

मैंने अपने इमोशन को कंट्रोल करके। आखिर कहानी की शुरूआत उस दिन से कि जिस दिन मैंने उसे पहली बार देखा।

Sample Copy. Not For Distribution.

1

3 महीने पहले

'**अभी** और कितनी देर है?' दक्ष ने मुझसे एक घन्टे में ये चौथी बार पूछा।

बस 15 मिनट और शायद,' मैंने न्यूजपेपर को फोल्ड करके उसकी तरफ बिना देखें कहा।

'शीट यार! अभी भी 15 मिनट है।' उसने गुस्से से पेपर उठाते हुए कहा। मैं उसकी हालत समझ सकता था, क्योंकि जिसे आदत हो फ्लाइट से हर जगह पहुंचने की उसे 10 घन्टे ट्रेन का ट्रेवल किसी जेल से कम नहीं लगता।

आखिर! जब ट्रेन अपने लास्ट स्टॉप रीवा ;म.प्र.द्ध पर रूकी, तब सारे पैसेंजर के उतरने के बाद मैं और दक्ष अपने बैग निकालकर कोच से बाहर आ गए। ट्रेन से उतरते ही दक्ष और मुझे काफी बेचैनी और अजीब सा लगा वहां क्योंकि हमें ट्रेन से ट्रेवल की आदत नहीं थी। मगर हमारी मजबूरी थी किसी भी हाल में यहां आज पहुंचना।

कुछ ही देर में दो लड़के मेरे पास आए, जो हमें रिसीव करने आए थे। वो हमारे बैग उठा के गाड़ी की तरफ ले गए। जिसके बाद हम उसमें बैठ के मेरे पुश्तैनी घर जो रीवा से लगभग 20 कि.मी. दूर खैरी गांव में है, के लिए निकले।

मेरे पापा जबलपुर और दो बड़े भाई रीवा में रहते है, मगर 28 और 29 जून को मेरा सारा परिवार हमारे इसी पुस्तैनी घर में आते है। क्योंकि यह दो दिन ही होते है साल केजब हम सब एक होते है और मैं भी साल में एक बार इसी दिन अपने घरवालों के पास आता हूँ।

आज मेरे पापा का बर्थ डे है और हर साल की तरह वह अपना बर्ड डे इसी घर में अपने घरवालों, और दोस्तों के साथ मनाते है। अगर मुझे इस दिन आस्कर अवार्ड भी मिले तो भी मुझे वो छोड़कर यहां आना होता किसी भी हाल में।

भले ये दिन हर साल आता है और वो अवार्ड मुझे इस जन्म में एक बार मिलता। स्टेशन से निकलने के 30 मिनट बाद हम घरपहुंचे। घर के बाहर मेरे दोनों बड़े भाई आनंद और सुमित खड़े थे शायद वो दोनों रात

Sample Copy. Not For Distribution.

की अरेंजमेंट कर रहे थे। वैसे तो ये मेरे सगे भाई हैं मगर हमारे बीच सगापन वाला कोई भी खास व्यवहार नहीं है फिर भी मैं कार से उतरकर सीधे उनके पास गया।

'हरी ओम भईया!' मैंने आनंद भईया के पैर फारमेल्टी की वजह से छूकर कहा

'हरी ओम! सफर कैसा गया?' आनंद भईया ने भी फॉर्मैलिटि के लिए पूछा।

'ठीक था भईया!' मैंने उनकी तरफ से नजर घुमाकर कहा।

'और ये कौन है?' उन्होंने दक्ष की तरफ इशारा करते हुए पूछा।

'ये मेरा दोस्त है भईया, ये भी मेरे साथ आया है।' मैंने दक्ष का परिचय करवाते हुए कहा, लेकिन दक्ष का प्रोफेशनली परिचय उन्हें नहीं दे सकता था। वरना सुबह सुबह ही उनसे बेवजह बहस शुरू हो जाती।

'चलो जाओ अंदर! पापा से मिल लो पूछ रहे थे, तुम्हारे लिए। हमें अभी कुछ काम से रीवा जाना है। शाम को मिलते है।' इतना कहकर वो बिजी हो गए और मुझे पता था उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी मेरे बारे में ज्यादा जानने की और ना मुझे थी उनमें। इसलिए मैं घर के अदर आया और अपने पापा के रूम में गया जहां वो कुर्सी में बैठकर कुछ तस्वीरें देख रहे थे। मैं धीमे कदमों से उनकी तरफ बढ़ा ताकि उनके मेरे अन्दर आने का पता न चल सके। मैंने पास जाकर देखा तो वो हमारे बचपन की तस्वीरें लेकर बैठे थे।

'हैप्पी हैप्पी बर्थ डे! पापा!' मैंने मुस्करा कर उनके पैर छूकर सरप्राइस देते हुए कहा।

'ओह माहित! थैंक यू बेटाए कब आया?' उन्होंने मुझे गले से लगाकर कहा। उनके गले लगाने से मेरी सारी थकान खत्म हो गयी। मैं उनके चेहरे के भाव को देख के समझ सकता था कि वो भी मुझे देखने के लिये कितना बेताब रहते है।

'बस अभी आया पापा और आपकी तबियत कैसी है?' मैंने उनसे रिलैक्स होके पूछा।

'बस जब तक मेरे बच्चे खुश है, तब तक बिल्कुल फिट हूँ, मैं।' यह बात बोलकर वो शायद खुद को दिलासा दे रहे थे कि उनके बच्चों में आपस में सब सही है।

'और, आज ये पुराने फोटो कैसे देखने का मन हुआ?' मैंने उनसे फोटो एलबम लेते हुए पूछा।

आज सुबह से तुम्हारी माँ की याद आ रही थी। कि वो तुम सबसे कितना प्यार करती थी और उसी के वादे की वजह से मैं हर साल अपना और उसका बर्थ डे आज ही के दिन मनाता हूँ अपने बच्चों के साथ। काश! वो आजे होती तो हालात कुछ और होते शायद।' उन्होंने भावुक

Sample Copy. Not For Distribution.

होकर कहा, उनका ऐसा होना जायज था। क्योंकि वो मॉ से बहुत प्यार करते थे। शायद इसी वजह से उन्होंने दुबारा शादी नहीं कि लेकिन वो अपने बच्चों को मॉ का प्यार और ज्यादा वक्त भी नहीं दे पाए। मैंने उनसे वो फोटो एलबम लिया जिसमें हम तीनों भईयों की तस्वीर थी बचपन की मां के साथ, सबसे ज्यादा मेरी ही थी मॉ और पापा के साथ। ये फोटो देख के कुछ पल के लिये मैं अपने बचपन में चला गया था कि अपनी मॉ को खोने तक मेरे चेहरे की मुस्कुराहट ही अलग थी, जो अब तक एक अरसे से खो चुकी है। उनके जाने के बाद कुछ लोग बड़े होके बदल गए है मगर मैंने आज तक अपनी मासूमियत कायम रखी है क्योंकि इन फोटो को देखकर कोई नहीं कह सकता कि मैं बदल गया हूँ।

'पापा! माँ मुझे अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाती रहती है और आप भी थोड़ा यह सब ज्यादा नहीं सोचा करिए।' मैंने उन्हें दिलासा देते हुए कहा, उन्होंने दरवाजे के बाहर हाल में दक्ष को देखा।

'ये तुम्हारे साथ आया है क्या?' उन्होंने दक्ष को देखते हुए कहा जो फोन पर किसी से बात कर रहा था। बड़ी हुई शेव, विदेशों से आये टूरिस्टों जैसा बैग कन्धे में लटकाया हुआ और फ्रेंच इंग्लिश में बात करके स्टाइल मारने की आदत, उसको देख के कोई भी कह सकता था कि वो मेरे साथ ही आया होगा। क्योंकि इस छोटे से इलाके में जो भी बाहर से आता है लोगों केलिए वो नमूने और इंटरटेंनमेंट से कम नहीं होता। पापा और मैं जैसे ही हाल में आए दक्ष ने पापा के पैर छूकर उन्हें बर्थ डे विश किया।

'यह तुम्हारा दोस्त है माहित?'

'जी पापा! इस बार इसको भी साथ लाया हूँ।'

'क्या करते हो बेटा आप?' पापा ने दक्ष से पूछा।

'जी मैं फिल्म डायरेक्टर हूँ।' दक्ष ने अपनी छाती चौड़ी करते हुए कहा।

'अच्छा तो तुम भी उस पागलखाने की दुनिया के एक हिस्से हो।' पापा ने दक्ष की छाती को नार्मल साईज में लाने के लिए पर्याप्त जबाव दिया। दक्ष ये सुनने के बाद चेहरा उदास हो गया मगर उसका उदास होना जायज था क्योंकि शायद पापा नहीं जानते थे कि वो कितना फेमस डायरेक्टर है बॉलीवुड का, जिसकी फिल्में उसके नाम से चलती हैं न कि स्टार्स से, उसने पापा की बात का कोई जवाब नहीं दिया।

'चलो! जाओ तुम दोनों कमरे में, आराम करो फिर जल्दी से तैयार होके दिन के खाने में साथ बैठो।' पापा ने इतना कहकर नौकर को हमारे बैग हमारे रूम तक पहुंचाने को कहा।

मैं अपने रूम में जब आता हूँ, तो वहां सब वही वैसे का वैसा ही देखता हूं जैसा में छोड़ के जाता हूं हर साल। मैंने अपने खिड़की के परदे खोले ताकि सूरज की रोशनी से 1 साल से रह रहा अंधेरा कुछ हद

Sample Copy. Not For Distribution.

तक खत्म हो सके। मैं अपने बैग को ओपन कर ही रहा था कि दक्ष मेरे रूम में आयझं

‘अब पता पड़ा मुझे कि क्यूं तूं साल में एक बार ही घर आता है और हम हर दिन अपने घर जाने की सोचते हैं।’

उसने ताना मारते हुए कहा क्योंकि उसको मैंने अपने घर के हालात बताए थे। जिस पर उसको बिल्कुल भी यकीन नहीं हो रहा था। क्योंकि वो मानने को तैयार नहीं था कि कोई ऐसी भी फैमिली हो सकती है, जिनके घर का लड़का फिल्म राईटर हो, थोड़ी बहुत फेम हो बड़े–बड़े फिल्म स्टार के साथ उठते बैठते हो और अपनी लाईफ को खुद स्पेंड करने में सक्षम है। फिर भी उनके परिवार वाले अपने फैमिली बिजनेस में घसीटने के लिये हैऔर यहीं दुआ करते है कि इसका कैरियर बरबाद हो जाये ताकि ये भीख मांगता हुआ उनके पास आये। क्योंकि उन्हें उसके राईटर होने का कोई भी फक्र नहीं था।

‘तभी तो मैंने तेरे काम के बारे में अपने बड़े भईया के सामने नहीं बोला। वरना वो तो तुझे आतंकवादी की नजर से देखते।’ मैंने उसकी बात का जबाव देते हुए कहा।

‘माहित! यार तू जानता है ना कि हम यहां क्यूं आए है? ये तेरे लिए काफी जरूरी काम है, क्योंकि तेरा सारा कैरियर तेरी इस लिखी जाने वाली कहानी पर है और तू यहां रहकर स्क्रीनप्ले पर काम करना चाहता है, भाई तू डिप्रेशन में चला जाएगा।’ दक्ष ने ये सारी बातें शायद एक लंबी सास लेकर एक बार में बोली।

‘दक्ष! टेंशन मत ले, यहां से कल शाम तक सब चले जाएंगे। फिर यहां सब सुना हो जाएगा। बस मैं और दादी यहां रहेगें। तू ही बता मैं मुम्बई के शोर शराबे में सोचने की भी हिम्मत नहीं कर सकता तो फिर लिखना तो दूर। मैं चाहता हूं इस मूवी का स्क्रीनप्ले बिल्कुल दिल से और आराम से लिखू। ऐसे माहौल में लिखू जहां मुझे महसूस हो सकें कि हां मैं लिख सकता हूँ। अपनी सबसे बेस्ट मूवी।’ मैंने उसको जवाब के साथ–साथ अपने दिल की बात कही।

‘मगर आपको याद है ना माहित खत्री साहब। उससे पहले आपको अपने भाईयों और पापा से परमीशन लेनी होगी।’ उसने मुझे डराते हुए कहा।

‘बस पॉसिटिव सोच दक्ष, सब सही होगा देखना।’ मैंने उसे पॉजीटिव रहने को कहा ताकि वो मुझे और नर्वस ना करें निगेटिव बातों से।

‘चल ठीक है! देखते है, कल क्या होता है? अभी मैं जा रहा सोने, और रात को दारू का इंतजाम तो होगा ना?’ उसने बड़ी उम्मीद से पूछा, जैसे वो अपना नाम बेस्ट डायरेक्टर की नामिनेशन में सुनना चाहता हो। क्योंकि उसका सबसे बड़ा शौक था पीना, आमतौर पर छुट्टियों में लोग

Sample Copy. Not For Distribution.

घूमने जाते है। अपनी फैमिली को टाइम देते है। लेकिन दक्ष अपना सारा खाली टाइम शराब को देता है जिसे वो अपना सबसे बड़ा हमदर्द मानता है।

कहते है वो एक टाइम इतना बड़ा एडीक्टेड था कि शूट के टाईम भी पी के आता और एक्टर से अपने तरीके से उनका बेस्ट परफारमेन्स दिलवाता, जिसकी वजह से सब उसे यूनिक डायरेक्टर बोलते है। वो उन पियक्कड़ों में नहीं था जो अपनी हदें पार करके बदनाम हो जाते है। वो काफी समझदार था और पीने वालो के लिये मिसाल था कि आखिर शराब कैसे पी जाती है। कभी–कभी तो मुझे भी लगता था उसकी वजह से एक बार ड्रिंक कर लूं मगर मेरी वीलपावर काफी स्ट्रांग है।

दोपहर में मैं दादी से मिलने उनके रूम में गया। अपने मां और पापा के बाद में उन्हीं को सबसे ज्यादा अहमियत देता हूॅ अपनी फैमिली में। वो अपनी व्हील चेयर में बैठी कुछ पाठ कर रही थी और मुझे देखते ही उनके चेहरे पर एक अजीब और मुझे खुशी देने वाली मुस्कराहट आ गई।

'हरी ओम दादी मां! कैसे हो आप?' मैंने उनके पैर छूकर पूछा।

'मेरे सबसे प्यारे बेटे को अपनी दादी मॉ से मिलने का वक्त मिल गया।' उन्होंने मेरा माथा चूमते हुए कहा। मैं उनकी व्हील चेयर के पास पड़ी चेयर पर बैठ गया और उन्हें देख के सोचा, जिन्होंने हमें चलना सिखाया आज वो जब खुद ना चलने की हालत में है। तब हम में से कोई इनके साथ नहीं। क्योंकि मेरे दोनों बड़े भाई भले सुबह से यहॉ आये हो उन्होंनेएक बार भी दादी मॉ की खबर नहीं ली होगी कि वो कैसी है? यहॉ तक कि वो तो इनसे मिलने तक नहीं आये थे। खैर मेरा अपनी दादी मां से कनेक्शन काफी क्लोज है। बचपन से, वो मेरी बेस्ट फ्रेंड की तरह है, उनमें और मुझे काफी अन्डरस्टैण्डिंग है इसलिये वो मुझसे बिलकुल फ्रेंक होके बात करती है। मैंने भी उनके साथ काफी अच्छा फिल करता हुं।

'ऐसी बात नहीं है दादी मॉ! बस अब काम में कुछ ज्यादा ही बिजी हो गया हूॅ।' मैंने अपना बचाव किया। अपनी नजर को इधर उधर करके क्योंकि उनकी आंखों में आखें डाल के झूठ नहीं बोल सकता।

'हां! जानती हूं बहुत बड़ा लेखक है तू मगर क्या इतना बिजी रहता है कि फोन करने तक का टाइम नहीं रहता तेरे पास अपनीदादी को।'

वो पूरे मूड में मेरी खैर लेने वाली थी क्योंकि मैं मुश्किल से उनके सामने फंसा था आज।

'दादी ऐसी कोई बात नहीं है, मैं हर त्यौहार में या खास दिन में भले पापा को फोन न करूं मगर आपको जरूर करता हूं और आपके लिए जान हाजिर दादी।' मैंने हल्का मुस्करा के उन्हें जवाब दिया ताकि उन्हें मना सकूं।

Sample Copy. Not For Distribution.

‘हां! बड़ा चालू है तू, अच्छी तरह से जानता है कि मैं तेरी हर बात में आ जाती हूं।’ उन्हें भी हंसते हुए मेरे दिए हुए जवाब में से मेरा चालूपन निकाल दिया।

‘हां हां हां! दादी आप भी न सच में काफी क्यूट हो।’ मैंने हंसते हुए उनके गाल को खिलाते हुए कहा और उनके माथे में किस किया उनकी क्यूटनेस की वजह से।

‘माहित! तू तो जानता है मुझे तेरे बाप और तेरे दोनों भाईयों से कोई भी उम्मीन नहीं कि वो मुझे जिंदगी के इस अधूरे पड़ाव में कोई खुशी दे पाएंगे, जो भी है तू है मेरे लिए बेटा मरने से पहले तेरी शादी होते देखना चाहती हूं ताकि पूरी खुशी के साथ नाच सकूं और तेरे बड़े बड़े फिल्म स्टार दोस्तों से मिल सकूं और याद है ना तूने वादा किया था कि मेरे मरने से पहले तू एक बार मुझे अभिताभ बच्चन से मिलवाएगा।’ उन्होंने अपने बचे हुए सपनों की बातें को बीच में लाते हुए मुझसे पूछा क्योंकि उनका सपना था एक बार राजेश खन्ना या अभिताभ बच्चन से मिलना, राजेश खन्ना तो रहे नहीं अब किसी तरह से मुझे उन्हें अभिताभ सर से मिलवाना था क्योंकि मैं जिस दिन से फिल्म इंडस्ट्री में हूं, एक वजह ये भी ले कर चल रहा हूं कि मुझे दादी का प्रामिस पूरा करना है।

‘जरूर दादी, वो तो मेरे शादी में जरूर आएंगे क्योंकि अगर सब सही रहा तो आने वाले कुछ टाइम में मैं उनके साथ काम कर सकता हूं।’ मैंने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा, और हां मैं पूरी ट्राई कर रहा अभिताभ बच्चन को मेरी कोई स्क्रिप्ट पसन्द आ जाए।

‘तो इस बार रहेगा कुछ दिन कि चला जाएगा तू भी कल।’ उन्होंने मुझसे उम्मीद रखते हुए पूछा।

नहीं दादी मां, इस बार आपके साथ कुछ वक्त बिताउंगा। कम से कम 1 या 2 महीने रहूंगा यहां।’ मैंने उनको खुश करते हुए कहा।

‘चलो कम से कम कोई तो मुझे वक्त दे रहा है और मेरे लिए इतना वक्त निकाल रहा है?’ उन्होंने अपनी उदासी जाहिर करते हुए कहा।

‘चल अब जा जाके कुछ खा ले, भूख लगी होगी तूझे और खाने के बाद बादाम–दूध जरूर पीना।’ उन्होंने मेरी कमजोर हालत देख कर कहा शायद तभी वो मुझे मुझसे ज्यादा जानती है।

‘ठीक है दादी मां! फिर आता हूं मैं शाम को आपके पास,’ मैंने उनसे अलविदा लेते हुए कहा।

मैं खाने की टेबल पर जाने से पहले दक्ष को बुलाना चाहता था। मगर वो इतनी गहरी नींद में था जैसे वो यहां सदियों की थकान मिटाने आया हो, मैं उसे डिस्टर्ब किए बिना ही खाना खाने चला गया। अपना खाना खाने के बाद बादाम दूध पीकर आराम करने अपने कमरे में जा

Sample Copy. Not For Distribution.

रहा था। मैं सीढ़ियों के उपर चढ़ा ही था कि मुझे एक तरफ से कॉच के टूटने की आवाज आई।

मैं फौरन वहा गया और देखा दीवाल पर लगे शो केस में रखे कॉच के कुछ फ्लावर पॉट नीचे गिर चुके थे। जिसमें शायद आज तक कभी भी असली फ्लावर नहीं रखे गए थे। और मैंने देखा एक लड़की शायद जिसकी वजह से वो गिरे थे, उन्हें जल्दी–जल्दी समेट रही थी। मैं उसके पास उसकी मदद करने गया और झुककर थोड़े टुकड़े उठाने में उसकी मदद की।

'अरे आराम से उठाइए, आपको ये लग सकता है। वैसे भी अब ये जुड़ेगें नहीं।' मैंने उसे सावधनी बरतकर उन टुकड़ों को उठाने के लिये कहा।

'अगर किसी को पता पड़ गया कि ये मेरे से हुआ है। तो मेरा हाल पता नहीं क्या होगा?' उसने चेहरा छुपाकर सहमी–सहमी आवाज से अपना डर बयां करते हुए मुझे जवाब दिया और मैं उसकी शक्ल देखने की कोशिश कर रहा था। जो उसके बालों की वजह से मैं नहीं देख पा रहा था।

'आह ह् ह्,,' उसकी सहमी दर्द भरी आवाज मैंने सुनी, मैंने देखा उसके हाथ में कॉच का टुकड़ा लग गया था। जिसकी वजह से उसका खून बहना शुरू हो गया ।

मैंने उसका हाथ पकड़ के आराम से उस कॉच के टुकड़े को निकाला मगर उसके हाथ से खून और तेजी से निकलने लगा। मैंने उसकी चेहरे की तरफ देखा उसकी आखों से आंसू बह रहे थे। मैं उसके चेहरे को देखता ही रह गया। इतना मासूम चेहरा जो मैंने कभी सपनों में भी शायद इमेंजिन नहीं किया। वो फकीर के भेष में शहजादी लग रही थी।

मेट्रो सिटी की लड़कियां तो कास्मेटिक और अपने उपर वैज्ञानिकों से भी ज्यादा एक्सपेरिमेंन्ट करके बार्बी डाल बनने की कोशिश करती है। ये लड़की तो कुछ ना होके भी उन सबसे भरी हुई थी। मैं यही सब सोच ही रहा था उसके चेहरे को देखकर कि उसका खून निकलना और बढ़ गया। मैंने फौरन अपना रूमाल निकाला और उसके हाथ पर बॉध दिया। वो फिर भी नहीं मानी, अब भी एक हाथ से वो कांच के टुकड़े उठा रही थी।

'अब आप रहने दीजिए प्लीज!' मैंने थोड़ी आवाज तेज करते हुए कहा, इतने में पीछे से किसी के आने की आहट हुई।

'अरे! छोटे साहब क्या हुआ?' राजू ने मुझसे पूछा जो हमारे यहां बचपन से काम करता था।

'ये पाट मुझसे गलती से गिर गया।' मैंने सारी गलती का इलजाम अपने ऊपर लेते हुए उसे कहा।

Sample Copy. Not For Distribution.

'ये सारा साफ करवा दो! किसी को बोल के।'

'जी छोटे साहब, वैसे भी कॉच का टूटना शुभ होता है।' उसने झूठी हंसी हंस के मेरी गलती को सही ठहराते हुए कहा और किसी को बुलाने के लिए बाहर की तरफ गया गार्डेन में ।'आप जाकर अब कुछ मेडिसिन ले लीजिए।' मैंने उससे कहा, उसने अपने आंसू पोछे और सर झुका कर उस मासूम बच्चे की तरह जाने लगी जिसे खेलते–खेलते चोट लगी हो।

हमारे यहा काम करने वाले काफी लोग बदल जाते शायद ये भी उन्हीं में से एक हो क्योंकि इससे पहले कभी इसे अपने घर में नहीं देखा था। मैं भी राजू की बात से खुश हुआ क्योंकि कॉच टूटना अगर शुभहोतां है तो जरूर कुछ अच्छा ही हुआ है। जो मैंने इस लड़की को देखा।

Sample Copy. Not For Distribution.

2

मैं पार्टी के लिए अपने कमरे में तैयार हो रहा था और हर साल की तरह इस साल भी मैंने अपना वही फेवरेट ब्लैक ब्लैकबेरी सूट पहना जो मेरा सिम्बल था। क्योंकि मैं ड्रेसिंग के मामले में ज्यादा कन्फयूस नहीं होता था। ब्लैक सूट हमेशा से मेरी पहली और आखिरी पसन्द रही है। जो शायद मुझपे काफी सूट करता है। आईने में अपनी शक्ल देखते वक्त मैंने नोटिस किया कि दिनों दिन मैं काफी स्मार्ट होता जा रहा हूँ शायद ये जवानी के चरम स्थिति में होने की वजह थी, या फिर मेरी माँ के खूबसूरत होने के गुण मुझमें समाये थे। पूरी तरह तैयार होकर मैं दक्ष के रूम में गया। जहां वो भी लगभग ऐसे तैयार हो चुका था। जैसे मेरे नहीं उसके बाप का बर्थ डे हो।

'चले! आज बड़े दिनों बाद सुकून से पीने का मौका मिलेगा।' दक्ष ने फिर अपने आपको बड़ा प्रोफेशनली बिसीमैन साबित करते हुए कहा, ताकि वो ज़ाहिर कर सकें की उसे अपने सबसे बड़े शौक को पूरा करने तक का वक्त नहीं है।

'हां, चल वैसे भी पार्टी शुरू होने वाली है।' मैंने उसे कहा ताकि टॉपिक ना बड़े। हम घर से निकलकर बाहर गार्डेन में पार्टी वाली जगह पर पहुंचे। जहां पर डेकोरेशन देख कर लग रहा था कि दो तीन दिन से लगे लोगों ने काफी मेहनत की है। गार्डेन वाकई काफी अच्छा लग रहा था। एक–एक चीज पूरी सेटिंग से रखी गई थी इंच बॉय इंच ।

चिमनी की लाईट से तो बिना तारों के रात को पूरा कर दिया। अरेंजमेन्ट ऐसा था जैसे मेरी इगेंजमेन्ट होने वाली हो क्योंकि मुझे हर साल डर इसी बात का रहता है की इन्हीं पार्टी के थ्रू पापा अपने किसी फ्रेंड की बेटी से मेरी शादी ना पक्की करवा दे। लेकिन ऐसा होगा नहीं कभी लाइफ में। बस इण्डिया की प्रोग्रेस के साथ साथ इस पार्टी में भी हर साल कुछ नयापन और भव्यता आ जाती है। ताकी दोनों भईया और पापा के दोस्तों के बीच में उनका नाम बढ़ जाता है।

पापा गार्डेन की एक तरफ अपने कुछ दोस्तों के साथ खड़े थे, सुमित भईया ने शायद दिन में ज्यादा ले ली थी इसलिए तेज आवाज में नारमल बातें कर रहे थे अपने दोस्तों से। हमारे काफी रिश्तेदार भी आये थे, जिन्हें मैं अपना चेहरा भी नहीं दिखाना चाहता वरना वो मुझ पर तरस खाना शुरू कर देते है और मेरे प्रोफेशन में अपनी आने वाली पीढ़ी का चान्स ढूढ़ते है कि उनके बच्चों को मैं फिल्म इंडस्ट्री में काम दिलवाऊंगा।

Sample Copy. Not For Distribution.

इतने में मेरे पीछे से मेरी दोनों भाभियों ने बुलाया, जो शायद अभी तैयार होके आनंद भईया के साथ आयी थी। क्योंकि वो कब से इतनी बिजी होगी ब्यूटी पार्लर और साड़ी सलेक्शन में की उन्हें टाइम हीं नहीं मिला होगा फंक्शन में कुछ टाइम पहले आने का ताकि वो सब मेंहमानों से अच्छे से मिल पाये। ये उनकी पुरानी आदत है। जिससे मैं वाकिफ था।

'हरी ओम भाभी!' फिर मैंने फारमेल्टी की वजह से दोनों के पैर छूकर कहा ,जिसमें अलका भाभी जो सुमित भईया की बीवी थी, हमेशा कि तरह मुझे पैर छूने के लिए मना करने लगी क्योंकि मैं उन्हीं की उम्र का था।

'देवर जी! साल में एक बार आते हो और हमारे लिए वक्त भी नहीं निकालते। क्यूं हम सब की याद नहीं आती? और सिंकुड़ते क्यों जा रहे हो दिन ब दिन, वहां खाने को नहीं मिलता क्या?' मोनिका भाभी ने मुझे ताना मारते हुए कहा, शायद उन्हें भी अब आनंद भईया का असर हो गया है। हॉ, मैं थोड़ा कमजोर हो गया था फिर भी एवरेज था, मुझे उनकी बात माइंड नहीं करनी थी क्योंकि तीनों भईयों में सबसे ज्यादा स्मार्ट में था और सबसे बेकार बॉडी शेप आनन्द भईया का। तोंद निकली, बड़ी–बड़ी मुछे, सॉवला रंग जिसमें बचपन में आयी चेचक की बीमार के दाग अभी तक बने हुये वो कही से भी 35 साल के नहीं लग रहे थे।

'नहीं आना मतलब ये नही हुआ भाभी कि याद नहीं आती और आप लोग भी तो आ सकते हो मुझे देखने।' मैंने अपने भतीजे अर्जुन की गोद में लेते हुए उन्हें जबाव दिया।

'देवर जी! आप बुलाएंगे तो जरूर आएंगे, हमें भी शौक है फिल्मों की शूटिंग देखने का।' अलका भाभी ने मुझसे कहा, वो मुझसे हमेशा उम्मीद लगा के रखती है कि मैं उनको अपनी किसी फिल्म में रोल दूगां। लेकिन मैं बिना हिरोइन के फिल्म लिख लूगां। मगर उन्हें रोल कभी नहीं दिलवाऊंगा।

'जरूर भाभी, अगली फिल्म की शूटिंग में जरूर आप सब को बुलाउंगा।' मैंने उन्हें झूठी तसल्ली देते हुए कहा।

'इनसे मिलिये भाभी! मेरे बेस्ट फ्रेंड और फिल्म डॉयरेक्टर दक्ष तनवानी।' मैंने दक्ष को उनसे मिलवाया और उनसे मैं उनके प्रोफेशन के बारे में बता सकता था क्योंकि वो जानती है बॉलीवुड सेलेब्रेटी का फेम कितना होता है।

'हेलो!' मोनिका भाभी ने दक्ष से बिना हाथ मिलाये कहा क्योंकि अगर उनसे किसी भी मर्द से हाथ मिलाते हुये आनन्द भईया ने देख लिया, तो फिर उनकी खैर नहीं क्योंकि वो एक काफी पोसीसिव नेचर के पति थे, खैर दक्ष ने डिसेटंली उनसे 'हैलो!' कहा और रिसपेक्ट की वजह से कोई भी बात नहीं की। मुझे पीछे से पापा के बुलाने की आवाज आई।

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book

At Educreation Store

www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

मैं अपनी आखरी साँस तक तुमसे प्यार करूँगा

इस बात को जानते हुये भी कि पवित्रा उसके घर मे काम करने वाली मेंड है माहित अपने अंदर प्यार के पहले एहसास को महसूस करता है और हर वो कोशिश करता है कि पवित्रा उसकी बात समझ पाये। मगर वो इतनी समझदार थी कि उन दोनो के बीच की हैसियत के फर्क को देखते हुये इस रिश्ते को दोस्ती तक ही सीमित रखा।

मगर जिंदगी के दुखों से टूटे दोनों के धागे एक दिन मिलकर एक अटूट गाँठ मे बंध जाते है।

कहते है प्यार अंधा होता है और प्यार करने वाले भी मगर समाज और तमाशा बनाने वाले नही, इसलिये इन दोनो की प्रेम कहानी को भी एक ऐसी अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ता है जो इनसे जुड़ी सारी जिंदगियों को बदल के रख देता है।

सच्चे प्यार, अटूट भरोसे, और पवित्रा के अदभुत बलिदान की ऐसी दास्तान जो हर किसी के दिल और रूह को छू जाने का माद्दा रखती है और कहानी का एक ऐसा अंत जो आजतक किसी भी प्रेम कहानियों का नही हुआ होगा।

लेखक से संपर्क हेतु :
dakshchungwani@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-1-61813-404-2
9 781618 134042 >

Sample Copy. Not For Distribution.